26/12/2020

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के दीक्षांत समारोह पर माननीय अध्यक्ष का वर्चुअल उद्बोधन

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के पांचवें दीक्षांत समारोह में सम्मिलित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। आप सभी को दीक्षांत समारोह के अवसर पर बहुत-बहुत बधाई! जो साथी आज ग्रेजुएट हो रहे हैं, उनको और उनके माता-पिता को भी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय की स्थापना 2003 में की गयी थी। इस प्रकार यह विश्वविद्यालय अधिक पुराना नहीं है, लेकिन राजस्थान प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में इसका विशेष महत्त्व है। अपनी स्थापना के 17 वर्षों में इस विश्वविद्यालय ने बहुत अच्छी प्रगति की है। यहां के पाठ्यक्रम और कोर्सेज में सभी महत्वपूर्ण विषय सम्मिलित हैं। मुझे विश्वास है कि इस विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक शोध भी उच्च स्तर का हो रहा होगा।

आज आपके जीवन का बहुत महत्वपूर्ण दिन है। आज आप जीवन के एक चरण से निकलकर दूसरे चरण में प्रवेश कर रहे हैं। आज आपकी औपचारिक शिक्षा तो समाप्त हो गयी है परन्तु अब आप जिस कालखंड में प्रवेश कर रहे हैं, वह आपके जीवन की दिशा तय करेगा। यहां पर आपके शिक्षक हर समय आपका मार्गदर्शन कर रहे थे, आपकी सभी शंकाओं का समाधान कर रहे थे, परन्तु अब आप जिस युग में जा रहे हैं, वहाँ आपका शिक्षक जीवन स्वयं होगा, वही आपको शिक्षा देगा, अनुभव देगा और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी रहेगा।

आप जिस समाज में रह रहे हैं, जिस देश में रह रहे हैं, उनके लिए भी आपकी औपचारिक शिक्षा का पूरा होना बहुत मायने रखता है। अभी तक आपकी शिक्षा आपको देश का एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार कर रही थी। एक प्रकार से अभी तक देश आपको कुछ दे रहा था, पर अब आपकी बारी है देश को कुछ देने की।

आप एक अच्छे वैज्ञानिक, एक अच्छे समाजशास्त्री, एक अच्छे अर्थशास्त्री, एक अच्छे भाषाविद् तथा एक अच्छे नागरिक बनकर देश के विकास में योगदान कर सकते हैं। देश के नागरिकों की समृद्धि के लिए, उनका जीवन बेहतर बनाने के लिए कार्य कर सकते हैं। आपकी शिक्षा आपकी मातृभूमि का ऋण है जिसे आप अपने-अपने क्षेत्रों में देश सेवा कर के चुका सकते हैं।

आज देश को आप जैसी बौद्धिक सम्पदा मिल रही है। आपने अपने परिश्रम से जो इस यूनिवर्सिटी में सीखा है, उसके लिए शुभकामनाएं और राष्ट्र-निर्माण के जिस बड़े लक्ष्य को लेकर आज आप यहां से प्रस्थान कर रहे हैं, उस मंजिल के लिए, नए सफर के लिए भी शुभकामनाएं।

मुझे विश्वास है कि आप अपने कौशल और अपनी प्रतिभा के बल पर आत्मनिर्भर भारत की बड़ी ताकत बन के उभरेंगे।

आज आप ऐसे समय में यूनिवर्सिटी से निकल के इंडस्ट्री में कदम रख रहे हैं, जब कोरोना महामारी के चलते पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था में बड़े बदलाव हो रहे हैं।

हमें इसी वृहत् सामाजिक-आर्थिक उथल-पुथल की स्थिति में अपने लिए अवसर निकालना है। यदि 21 वीं सदी को भारत की सदी बनाना है, तो यही अवसर है।

जब आप कार्यक्षेत्र में उतरेंगे तो यह आपका सबसे बड़ा दायित्व होगा कि किस प्रकार हमारी शक्तियों को, हमारी ऊर्जा को, हमारे कौशल को विश्वस्तरीय उत्पादों में बदलना है, किस प्रकार ग्लोबल सप्लाई चैन का एक अहम हिस्सा बनना है।

हमारा लक्ष्य आत्मनिर्भर भारत का निर्माण तो है ही परन्तु हम मात्र आत्मनिर्भर ही न हों बल्कि विश्व को भी आपूर्ति करें, पूरा विश्व हमारे उत्पादों की गुणवत्ता और विविधता का कायल हो और हमारे सामान का विलिंग खरीदार हो। यह आपकी चुनौती भी है और दायित्व भी।

आज का भारत परिवर्तन के एक बड़े दौर से गुजर रहा है। हमारा देश एक युवा देश है। हमारे देश की लगभग आधी आबादी उन लोगों की है जिनकी उम्र 25 वर्ष से कम है। दो-तिहाई आबादी की उम्र 35 वर्ष से कम है।

इस युवा शक्ति, अक्षय ऊर्जा का समुचित उपयोग करने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। उनके अंदर की प्रतिभा, उनकी असीम संभावनाओं को सही रूप से राष्ट्र निर्माण के पावन कार्य में उपयोग करने के लिए पिछले कुछ वर्षों में कई पहल आरम्भ किये गए हैं।

हर नौजवान में एक उद्यमी छिपा होता है। आवश्यकता है तो बस उसे सही सहायता और उचित वातावरण देने की। इसी का प्रयास कौशल विकास, डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया जैसी योजनाओं के माध्यम से किया गया है ताकि आज का युवा नौकरियां खोजने के लिए नहीं बल्कि देने के लिए आगे आये। आपके पास वर्तमान के साथ ही भविष्य के भारत का निर्माण करने की भी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

आपकी सबसे बड़ी संपत्ति शिक्षा ही है। यही वह पूँजी है जो भविष्य को आसान बनाएगी। शिक्षा मानव समुदाय की महत्वपूर्ण आधारशिला है। शिक्षा के माध्यम से ही एक अबोध बालक उत्पादक, चिंतनशील एवं बौद्धिक राष्ट्रीय निधि के रूप में उभरता है।

शिक्षा एक व्यक्ति के विचारों का रूपांतरण कर उसे समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप ढालने का पुनीत कार्य करती है।

शिक्षक अपने आदर्श व्यवहार के माध्यम से एक बालक के शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा का परिशोधन करते हुए उसे सुसंस्कृत एवं वैश्विक स्तर के अनुरूप बनाने में अहम भूमिका निभाता है।

हमारे देश में शिक्षा और गुरु शिष्य परंपरा की एक प्राचीन विरासत रही है। 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा के क्रियान्वयन हेतु समुचित विद्या का विधान बनाया गया था जिससे व्यक्ति शिक्षार्थी, विनयशील एवं विवेकशील बन सके। ऐसी विद्या की आज के विश्व में और अधिक आवश्यकता है।

किसी राष्ट्र की प्रगति उसके अध्यापकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। यही कारण है कि अध्यापन को सर्वोत्तम सेवा की संज्ञा दी जाती है।

शोध किसी भी विश्वविद्यालय का दर्पण होता है। गुणवत्तापूर्ण तथा उपादेयता-युक्त शोध समाज को नई दिशा प्रदान करने के साथ-साथ समाज व राष्ट्र के उन्नयन का मार्ग भी प्रशस्त करता है। ज्ञान के उन्नयन के लिए भी निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए।

शिक्षकों द्वारा अध्यापन कार्य में पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण का भाव होना चाहिए। उनके लिए यह भी आवश्यक है कि वह विद्यार्थियों में ऐसे गुणों का विकास करें जिससे एक सफल समाज और उन्नत राष्ट्र का निर्माण हो सके।

शिक्षा को स्थानीय आवश्यकताओं तथा स्थानीय संभावनाओं से जोड़ने की बहुत अधिक आवश्यकता है। यह बात विशेषकर राजस्थान में लागू होती है। राजस्थान का पश्चिमी प्रदेश प्राकृतिक दृष्टि से मरुस्थलीय है। ऐसी स्थिति में विश्वविद्यालयों को अपनी रचनात्मक क्षमता व शोध से प्राकृतिक तथा मानवीय संसाधनों को उन्नत करने, जल के संग्रहण में सहायता करने इत्यादि के क्षेत्र में कार्य करना चाहिए।

शिक्षा तभी सार्थक होती है जब समाज के जीवन में परिवर्तन लाती है, उसको बेहतर बनाती है।

मुझे देश की युवा शक्ति की प्रतिभा एवं सामर्थ्य पर पूर्ण विश्वास है। देश का युवा अपनी संकल्प शक्ति, कर्मशील आचरण और कठोर परिश्रम के बल पर पूरे विश्व में अपनी प्रतिभा के लिए जाना जाता है। आपसे भी यही अपेक्षा है कि आप आगे चलकर विश्व में अपने विश्वविद्यालय का, अपने प्रांत का तथा अपने राष्ट्र का नाम ऊंचा करें।

आज की युवा पीढ़ी को हर प्रकार से अपने परिवेश, समाज और राष्ट्र के प्रति जागरूक होना चाहिए। अभी कुछ ही दिन पहले हमने 26 नवम्बर को संविधान दिवस मनाया था। इसका उद्देश्य समाज में संवैधानिक मूल्यों के प्रति ज्ञान का प्रचार और प्रसार करना है।

इसी पहल के अंतर्गत माननीय प्रधानमंत्री जी ने KYC का एक नया अर्थ दिया है अर्थात Know Your Constitution. पूरे समाज का विशेष कर छात्र वर्ग और युवा वर्ग का दायित्व है कि वह संविधान और इसके प्रावधानों के प्रति जागरूकता का प्रचार-प्रसार करें। ऐसा करने से देश में संवैधानिक मूल्य मजबूत होंगे तथा प्रजातंत्र सशक्त होगा।

हम सब अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं तथा उसके लिए संघर्ष करने को भी तत्पर रहते हैं। परन्तु संवैधानिक अधिकार के साथ साथ हमारे कुछ संवैधानिक कर्त्तव्य भी हैं। हम जब तक इन कर्तव्यों का सम्यक् अनुपालन सुनिश्चित नहीं करेंगे, तब तक एक आदर्श समाज और राष्ट्र का निर्माण असंभव है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय बीकानेर ने एक संविधान पार्क का निर्माण कराया है। इस पार्क के माध्यम से विश्वविद्यालय में अध्ययन हेतु आने वाले विद्यार्थियों एवं आगंतुकों को संविधान की मूल अवधारणा, उद्देश्य, कर्तव्य आदि के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त हो सकेगी। मुझे यह जानकर भी अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि इस विश्वविद्यालय परिसर में एक भव्य स्वामी विवेकानंद स्मारक बनाया गया है। यह स्मारक स्वामी जी के जीवन के चिरंतन मूल्यों और आदर्शों को जीवंत बनाए रखने का सार्थक प्रयास है।

मैं विश्वविद्यालय के इस दृष्टिकोण की सराहना करता हूं कि उन्होंने स्वामी विवेकानंद के जीवन से जुड़े विभिन्न घटनाओं जैसे धर्म संसद, शिकागो यात्रा तथा महत्वपूर्ण विषयों, जैसे – गुरु-शिष्य संबंध, राजस्थान यात्रा, इत्यादि के वृतांत प्रदर्शित किये हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि विश्वविद्यालय का यह प्रयास शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के चरित्र एवं व्यक्तित्व को सुदृढ़ बनाएगा और यह स्वामी विवेकानंद जी के विचारों से प्रेरित होकर परिवार, समाज और राष्ट्र में नवीन चेतना पुंज के रूप में प्रकाशित होंगे।

आज इस विशेष अवसर पर मैं यह भी विश्वविद्यालय से अपेक्षा करता हूं कि समाज एवं राष्ट्र की वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शैक्षणिक एवं शोध कार्यों में निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हो ताकि विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक पहचान बन सके।

भारत सरकार की नई शिक्षा नीति, वोकल फॉर लोकल कार्यक्रम, आत्मनिर्भर भारत जैसे कार्यक्रमों को विश्वविद्यालय की कार्य योजना का अंग बनना चाहिए ताकि शिक्षा को समाज और राष्ट्र हित की ओर उन्मुख किया जा सके।

21वीं सदी में दुनिया की आशाएं और अपेक्षाएं भारत से हैं और भारत की आशा और अपेक्षा आपके साथ जुड़ी हैं। हमें तेज गति से चलना ही होगा, आगे बढ़ना ही होगा। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अंत्योदय का विजन दिया, Nation First के जिन सिद्धांतों को लेकर वो चले, हमें मिलकर उन्हें और मजबूत करना है।

हमारा हर काम, राष्ट्र के नाम हो, इसी भावना के साथ हमें आगे बढ़ना है।

एक बार फिर आप सभी को बहुत-बहुत बधाई और उज्ज्वल भविष्य के लिए अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद !!